PHILOSOPHY

Class - XII

श्रीमद्भगवद्गीता (सामान्य परिचय)

~~कर्मयोग (अनासक्त कर्म), स्वधर्म, लोकसंग्रह~~

Dr. S. K. Singh
Mob.- 9431449951

A. महत्वपूर्ण तथ्य :-

→ श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय साहित्य/वाङ्मय का अमूल्य निधि है। यह उपनिषदों का सार है, भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

→ श्रीमद्भगवद्गीता का आरंभ धृतराष्ट्र और संजय के संवाद से होता है। इसके रचयिता महर्षि ~~व्यास हैं~~ वेदव्यास हैं।

→ 'श्रीमद्भगवद्गीता' को संक्षेप में 'गीता' कहा जाता है। यह कर्तव्याकर्तव्य के द्वन्द्व में उलझे अर्जुन को सार्वभौमिक समाधान के रूप में दिया गया दिव्य प्रेरक उपदेश है।

→ यह महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है। यह मूलतः संस्कृत में है। इसमें 18 अध्याय हैं और 700 श्लोक हैं, जबकि महाभारत में लगभग 1,00,000 श्लोक हैं।

→ गीता संवाद के रूप में है, जिसमें कुल चार पात्र हैं -

पात्र का नाम →	कृष्ण	अर्जुन	संजय	धृतराष्ट्र	
श्लोक की संख्या →	574	84	81	01	} कुल श्लोक 700

~~→ गीता भारतीय धर्म एवं दर्शन के आधार~~

→ गीता वेदान्त दर्शन के आधार स्तम्भ 'प्रस्थानत्रयी' का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। स्थापना एवं प्रकृति के आधार पर प्रस्थानत्रयी के तीनों ~~स्तम्भों को~~ स्तम्भ को विशिष्ट प्रस्थान के रूप में परिभाषित किया गया है -

(i) उपनिषद् - वैदिक/श्रुति प्रस्थान
(ii) ब्रह्मसूत्र - दार्शनिक/तर्क प्रस्थान
(iii) गीता - स्मृति प्रस्थान

→ गीता को योगशास्त्र भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ योग एवं आचार को विशेष महत्त्व दिया गया है। गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में कहा गया है - "...ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे ---"

→ गीता के अनुसार योग का अर्थ है - जीवात्मा का परमात्मा से मिलना। यहाँ इसके साधन के रूप में मुख्यतः ज्ञान, कर्म और भक्ति को स्वीकार किया गया है।

→ इन तीन साधनों के निमित्त तीन योग की प्रसिद्धि है, जिनके प्रवक्ता हैं -

(i) कर्म योग - ~~बालगंगाधर~~ बालगंगाधर तिलक
(ii) भक्ति योग - रामानुज, निम्बार्क, मध्व, वल्लभ आदि ईश्वरवादी वेदान्ती
(iii) ज्ञान योग - शंकराचार्य (अद्वैत वेदान्ती)

→ आधुनिक काल में गीता पर श्री अरविन्द के भाष्य को पूर्णयोग तथा महात्मा गाँधी के भाष्य को अनासक्त योग के नाम से जाना जाता है।

Scanned with CamScanner

→ महात्मा गाँधी और आचार्य विनोबा भावे ने गीता को 'माता' की संज्ञा दी है।
→ गीता में 'योग' की तीन परिभाषा दी गई है –
(i) समत्वं योग उच्यते (2.48)
(ii) योगः कर्मसु कौशलम् (2.50)
(iii) दुःख संयोग वियोग योग संज्ञितम् (6.23)।
→ गीता में अनासक्त एवं सिद्ध पुरुष को 'योगी', 'स्थितप्रज्ञ', 'त्रिगुणातीत' कहा गया है एवं ऐसी मनोदशा/भाव की उपलब्धि को 'ब्राह्मीस्थिति' कहा गया है।
→ गीता के सृजनकर्ता को अवगति है कि संसार में सभी व्यक्ति एक प्रकार के नहीं होते फलतः भगवत्ता की प्राप्ति हेतु मनुष्य के ~~मनोवैज्ञा~~ मनोवैज्ञानिक क्षमता के आधार पर योग-मार्ग अपनाने का आदेश देती है। ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग ~~आदि~~ विभिन्न योगमार्ग की प्रस्तावना श्रीकृष्ण गीता में मानव के समक्ष रखते हैं"। मनुष्य के सामने संकल्प/चयन की स्वतंत्रता है, वह अपनी मनोवैज्ञानिक क्षमता के अनुरूप किसी भी मार्ग का चयन कर सकता है। ये सभी योग-मार्ग एक ही लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कराते हैं, इनमें कोई विरोध नहीं है।

Scanned with CamScanner

PHILOSOPHY

Class - XII

Dr. S. K. Singh
Mob. -9431449951

(A)

अनासक्त कर्म (गीता)

→ कर्मयोग के विश्लेषण से निष्काम कर्म या अनासक्त कर्म की अवधारणा प्रस्फुटित होती है। स्वधर्म को किस मनोदशा से सम्पादित करनी चाहिये, उसके ढंग और आकांक्षा कैसी होनी चाहिये - इसी प्रश्न का उत्तर है निष्काम/अनासक्त कर्म की अवधारणा।

→ निष्काम कर्म का आशय है फलाकांक्षा से रहित अर्थात् कर्म-फल के प्रति आसक्ति से रहित होकर किया जानेवाला कर्तव्य। श्रीकृष्ण कहते हैं - 'तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फलों में कभी नहीं'। तुम कर्म-फल प्राप्ति के लिये कर्म करनेवाला न बनो और न ही तुम अकर्म में रुचि लो अर्थात् निष्क्रिय हो जाओ'।

→ निष्काम कर्म का आशय 'कर्तव्य कर्तव्य के लिये' है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि यदि तुम युद्ध करने के स्वधर्म को संपन्न नहीं करते हो तो तुम्हें अपने कर्तव्य की ~~अपेक्षा~~ उपेक्षा करने का पाप लगेगा इसलिये बिना परिणाम पर विचार किये युद्ध के लिये युद्ध करो, कर्तव्य समझकर युद्ध करो।

→ गीता के अनुसार कर्म दो प्रकार के होते हैं - सकाम कर्म और निष्काम कर्म। सकाम कर्म फलाकांक्षा से किया जाता है इसलिये बन्धनकारी है जबकि निष्काम कर्म फलाकांक्षा से रहित कर्म है, 'कर्तव्य कर्तव्य के लिये' भावना से किया गया कर्म है, अतः बन्धनकारी नहीं है।

→ निष्काम कर्म करने वाला वास्तविक त्यागी है क्योंकि वह कर्म करते हुए कर्म-फल का त्याग करता है। ऐसा कर्म कर्म-त्याग न होकर कर्म में त्याग है, अतः यह बन्धन का कारण नहीं बनता। यह बुद्ध के अनासक्त कर्म की भाँति है जिसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि निष्काम कर्म भूने बीज की तरह है जो फल देने में असमर्थ है।

→ यह प्रवृत्ति का मार्ग है, निवृत्ति का नहीं। यह सिर्फ जानने में भरोसा नहीं करता बल्कि निष्काम कर्मयोगी करने में विश्वास करता है। 'करने' में इनका भरोसा इतना है कि आत्मज्ञान के बाद भी कर्म

Scanned with CamScanner

से संन्यास का यहाँ समर्थन नहीं किया गया है। श्रीकृष्ण के अनुसार कर्मयोगी को लोक-कल्याण हेतु पूर्व की भाँति तन्मयता से कर्म सम्पादन करता है, अगर वह ऐसा न करे तो सामान्यजन उसका अनुकरण कर निष्क्रिय हो जायेंगे।

→ निष्काम कर्म →

क्या है	क्या नहीं है
(i) कामना-रहित कर्म	(i) कर्म-संन्यास (निवृत्ति)/कर्म का त्याग
(ii) प्रवृत्ति में निवृत्ति	(ii) प्रवृत्ति से निवृत्ति
(iii) अनासक्त कर्म	(iii) फलासक्त कर्म
(iv) तृष्णा-रहित कर्म	(iv) केवल काम्य कर्मों/निषिद्ध कर्मों का त्याग
(v) ईश्वरार्थ कर्म	(v) स्वार्थयुक्त कर्म
(vi) तन्मयता से कर्म-सम्पादन	(vi) निष्क्रियता/अकर्मण्यता
(vii) लोक-कल्याणार्थ कर्म	(vii) स्वजन-हितार्थ कर्म

→ निष्काम कर्म के दो लाभ → (i) कर्तापन या ममता का त्याग तथा (ii) आसक्ति या तृष्णा का त्याग। अर्थात्, किसी भी कायिक/मानसिक कर्म में कर्तृत्व का अभाव यानि 'मैं इस कार्य को करता हूँ' इस भावना का त्याग। तृष्णा के अभाव से तात्पर्य 'कामना का अभाव' से है अर्थात् तटस्थ भाव से काम करने से है।

→ निष्काम कर्म के सम्पादन में कर्तापन का अभाव कैसे संभव है? गीता का कहना है कि जब मनुष्य समझे कि कर्म तो प्रकृति के गुणों के द्वारा किये जाते हैं। इसलिये ज्ञानी व्यक्ति सभी कर्मों को प्रकृति के गुणों द्वारा ही कृत मानते हैं। इस अहंकार वश स्वयं को कर्ता मानने लगते हैं, यही सारी सभी समस्याओं का जड़ है, जबकि वास्तव में प्रकृति के तीनों गुण (सत्व-रज-तम) ही कर्ता हैं।

→ ~~गीता के अनुसार~~ वस्तुतः निष्काम कर्म नैतिक जीवन का निचोड़ है और यह एक ऐसी समन्वित दृष्टि का प्रतिफल है जो ज्ञान और भक्ति, व्यक्ति और समाज, संन्यास और भोग, नियतत्व और अनियतत्व, प्राकृत और अप्राकृत, भक्त और भगवान सम्बन्धों के मध्य सुन्दर सामंजस्य स्थापित करती है।

→ इस प्रकार निष्काम कर्म मनुष्य को क्रमशः स्वार्थ से उसका परार्थ की ओर उस सीमा तक ले जाता है जहाँ उसके संकल्प, ज्ञान, भाव - सभी ईश्वरीय हो जाता है। निष्काम कर्म का उद्देश्य ज्ञान, भक्ति या प्रेम के माध्यम से मानव को ईश्वर के लिये कर्म में स्थापित करता है।